आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के काव्य में व्यंग्य

* डॉ. परितोष बैलगो

हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर लगातार व्यंग्य का प्रवाह दिखाई देता है। व्यंग्यकार किसी प्रकार के अन्याय को सहन नहीं कर सकता। उसे समाज में कोई भी विकृति दिखलाई देगी, वह उसके परिहार की अवश्य चेष्टा करेगा।[1]

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की परम्परा का विश्लेषण करते हुए नगेन्द्र ने लिखा है– 'वीर गाथा की अन्तिम प्रतिध्वनि हम्मीरदेव को पतन के बाद ही शान्त हो गई। यह देश के पतन की चरम सीमा थी। देश की परिस्थितियों ने इसी समय कबीर को जन्म दिया। जिसकी आत्मा में निराशा ने अस्थिसार भर दिया था। नैराश्य की अंधेरी रात्रि में पापों और अत्याचारों की इस झंझा में दुर्बल शरीर कबीर अचल पर्वत के सदृश खड़ा हुआ हिन्दू और मुसलमानों को सावधान करता रहा। सीधे ढंग से न मानने वालों के लिये उसके पास एक साधन था व्यंग्य। इस वृद्ध जुलाहे के शब्दों में गजब की शक्ति थी, उसकी फटकारें, उसके व्यंग्य तीर की तरह सुनने वाले के हृदय में प्रवेश करते थे और उसकी चोट से तड़प कर वहीं बैठ जाता था।[2]

वहीं तुलसी जी का व्यंग्य सपाट नहीं है, उसमें अप्रस्तुत विधान है, जो उच्च व्यंग्य काव्य का एक लक्षण है। पर

अकाजु लगितनु परहरहीं।
जिमि हिम उपलकृषि दल गरहीं।
बायस पालिहि अति अनुरागा, होहिं निरामिष कबहूं कि कागा।[3]

यहां तुलसीदास जी एक सफल व्यंग्यकार के रूप में आते हैं। रीतिकालीन काव्य की एक विशेषता है विषयों की विविधता जिसके कारण इस काल के कवियों का व्यंग्य विनोद भी अनेक रूपों में सामने आता है। श्रृंगार सम्बंधी व्यंग्य, आश्रयदाता सम्बंधी व्यंग्य व पारिवारिक जीवन सम्बंधी व्यंग्य परन्तु रीतिकाल का अधिकांश काव्य श्रृंगार प्रधान है। इसलिये प्रेमी प्रेमिकाओं का हास–परिहास, उपालम्भ आदि के व्यंग्य के हजारों उदाहरण उसमें प्राप्त कर सकते हैं।[4]

भारतेन्दु काल में पर्याप्त मात्रा में व्यंग्य काव्य लिखा गया भारतेन्दु काल के कवियों ने कर्मचारी, महाजन, सम्पादक, पुलिस कर्मचारी, अंग्रेज आदि सभी को व्यंग्य का लक्ष्य बनाया गया है। यह व्यंग्य जनता जागरण की दृष्टि से लिखा गया।[5] धीरे–धीरे व्यंग्य के लक्ष्य बदले एवं उनमें विविधता आई। मार्मिकता की मात्रा भी बढ़ी। राजनीति तथा समाज में नेताओं का एक वर्ग बन गया। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद इनमें से कुछ मंत्री बन गए। इन सबके आचरणों पर व्यंग्यकारों की दृष्टि गई। व्यंग्यकार के आक्रोश का शिकार नेता बनने लगे क्योंकि इनकी कथनी करनी में फर्क आ गया। निराला ने कुकुरमुत्ता/नये पत्ते के द्वारा सामान्य जन की महत्ता से अनभिज्ञ समस्त अभिजात वर्ग, पूंजीपतियों सेठों पर तीखा व्यंग्य किया है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के काव्य पर निराला के व्यंग्य का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई देता है। निराला की तरह इन्होंने भी मानवीय कुरूपता को व्यक्त करके उसे दूर करने का प्रयास हमें पगपग पर दिखाई देता है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री वर्तमान समय में विज्ञापन के असर पर लिखते हैं कि–

विज्ञापन पागल जनता को केवल बरक बाहरी दिखता
भीतर गुड़ है या गोबर है, इसकी परख नहीं कर पाती।
चमकीला जो है, सोना वह नहीं हुआ करता है

* ब्लाक न. 37/1, नाभा एस्टेट, शिमला

अकसर बिना कसौटी चढ़े चमक तो प्रायः धोखा ही दे जाती।।[6]

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री : राजनीतिज्ञ कैसे अपने स्वार्थपूर्ति के लिये जनता का उपयोग करते हैं–

गैर के काम में लगा सकता हो अडंगा बात की बात में करवा सकता हो दंगा।

झूठ बोले, मगर ताव से कि सच जान पड़े। नेता वही, फिसल गढ़े में, कहे हर गंगा।। [7]

आज राजनीतिज्ञ जनसाधारण को कभी 'गरीबी हटाओ' नारे से कभी समाजवादी नारे से निरन्तर ठगते जा रहे हैं। समाज में विषमताएं बढ़ती जा रही हैं, गरीब के प्रति कहीं कोई वास्तविक सहानुभूति नहीं दिखती। पूंजीपति अपनी तिजोरियों को भरने में लगे हैं। बुद्धिजीवियों की ऐसी स्थिति में अधिक जिम्मेवारी बनती है कि वे इस परिस्थिति में आवाज उठाएं लेकिन यहां तो सब नहले पर दहले हैं, तभी आचार्य विष्णुकांत शास्त्री उन पर व्यंग्य करते हुए अपनी कविता बुद्धिजीवी में कहते हैं–

हर बात औरों की कन्ने से काटी
खाई सच–झूठ की तर्कों से पाटी।
जीत ली दुनिया कॉफी के प्यालों पर
शुद्ध बुद्धिजीवी की स्वस्थ परिपाटी।। [8]

अवसरवादी, बहरूपिये नेताओं आदि पर व्यंग्य करने का श्रीगणेश आधुनिक युग में निराला से ही माना जा सकता है। उन्होंने ऐसे साहित्यिकों पर भी व्यंग्य किया जिन पर राजनीति का रंग चढ़ने लगा था एवं जो तिकड़म से प्राप्त भौतिक उपलब्धियों का ताजा रस पाने को लालायित हो उठे थे।[9] आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की कविता 'नये युग के वनमाली' में आधुनिक लेखकों पर व्यंग्य किया गया है–

माथे पर मनों बोझ
दिमाग खाली।
घिस रहे कलम
दे रहे गाली।
नये युग के वनमाली। [10]

व्यंग्य काव्य का उद्देश्य समाज को सदैव सुधार की ओर अग्रसर करना है। आज कर्म करने की बजाए केवल बहस में बहस करके समस्या का हल ढूंढ लिया जाता है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने 'केवल बहस' के माध्यम से कार्य करने की उपेक्षा बातों में ही कार्य कर लेते हैं।

कर्महीन बहस
शेषनाग के फण ज्यों सहस!
फुफकारों में, नारों में
विष क्या कम है
क्यों न होगा पूंजीवाद
तहस–नहस
बहस, केवल बहस! [11]

जीवन में अनुभव की महत्ता पर आचार्य विष्णुकांत शास्त्री किताबी कीड़ा वालों पर उपदेश भरा व्यंग्य करते हैं कि–

मजा चलने का चलने वालों से पूछो
रोशनी क्या है, जलने वालों से पूछो।
न हल होंगे किताबों से प्रश्न जीवन के
इन्हें तुफान में पलने वालों से पूछो।। [12]

व्यंग्य की सृष्टि तब होती है जब किसी व्यक्ति या समाज की बुराई या न्यूनता को सीधे शब्दों में न कहकर उलटे या टेढ़े शब्दों में व्यक्त किया जाता है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री जीवन में कर्म को महत्त्व देते हुए आलसियों को कहते हैं कि–

काम होता नहीं किया जाता है
हृदय मिलता नहीं लिया जाता है।
किनारे बैठना तो सांस लेना है
बीच तरंगों के जिया जाता है। [13]

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का व्यंग्य समाज एवं व्यक्ति की दुर्बलता, विसंगति, मिथ्याचार, असामंजस्य, अन्याय, अविचार आदि पर प्रहार करता है एवं इन पर हंसता भी है, लेकिन इस हंसी में आनन्द की मात्रा कम होती है एवं अधिकतर पीड़ा ही होती है। व्यंग्य कोरा हास्य नहीं है, इसका मूल प्रयोजन मनोरंजन ही नहीं होता है। व्यंग्य का उद्देश्य समाज एवं व्यक्ति का सुधार करना होता है। व्यंग्य में व्यथाएं उत्पन्न करने वाली विडम्बनाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। व्यंग्य एक कड़वी दवा है जिसके द्वारा समाज एवं व्यक्ति की बुराइयों का शमन किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1.रामचन्द्रन नायर, आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, पृ. 50 । 2. वीणा, सितम्बर–1988, पृ. 37 । 3. भागीरथ मिश्र, तुलसी रसायन, पृ. 224 । 4. रामचन्द्रन नायर, आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, पृ. 61 । 5. वही, पृ. 78–79 ।6. विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 33 । 7. वही, पृ. 37 । 8. वही, पृ. 37 । 9.रामचन्द्रन नायर, आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, पृ. 137 । 10. विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 37 । 11. वही, पृ. 37 । 12. वही, पृ. 31 । 13. वही, पृ. 31।